चंचल

हिंदी विद्यापीठ-पार्लामेंट

जुलाई-दिसम्बर १९३७

प्रकाशक

पार्लामेंट सेक्रेटरी, हिंदी विद्यापीठ-पार्लामेंट,

देवघर (बिहार)

पदाधिकारी

अध्यक्ष—महामाननीय वसंतकुमार झा 'कुमार' विशारद
[भागलपुर]

उपाध्यक्ष—महामाननीय एन० डी० शंकर [कर्नाटक]

मंत्री-मंडल

प्रधान मंत्री—महामाननीय देवनारायण कुँवर 'किसलय' विशारद
[दरभंगा]

न्याय और व्यवस्था

स्वराष्ट्र-सचिव—महामाननीय लालसिंह 'त्यागी' विशारद [पटना]

अर्थ-सचिव—महामाननीय बी० ए० चिन्नस्वामी [मद्रास]

शिक्षा और स्वास्थ्य-सचिव—महामाननीय प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक
[उड़ीसा]

कला और उद्योग-सचिव—महामाननीय एस० बी० कृष्णन [मद्रास]

कृषि और व्यापार-सचिव—महामाननीय वेंकटेश्वर राव अरविंद
[आंध्र]

साहित्य-सचिव—महामाननीय गोविंदप्रसाद झा विशारद
[भागलपुर]

पार्लामेंट-सेक्रेटरी—माननीय शंभुनाथ झा साहित्य-भूषण
[संथाल परगना]

दल के नेता

उग्र दल—

नेता—माननीय के० गोपाल, साहित्य-भूषण [केरल]

उपनेता—माननीय सागरप्रसाद राय, विशारद [संथाल परगना]

किसान-पार्टी—

नेता—माननीय सेवाधर झा 'मधुप' विशारद [भागलपुर]

उपनेता—माननीय शांतिप्रसाद पंडित [संथाल परगना]

ता० १४ अगस्त शनिवार—

इस सभा की सम्मति में साहित्य-निर्माण में युग-धर्म की उपेक्षा नहीं की जा सकती । अतः लेखक तथा कवियों को चाहिएँ कि वे युग-धर्म के निर्देश पर ही चलें ।

प्रस्तावक—महामाननीय गोविंदप्रसाद झा विशारद [भागलपुर]

समर्थक—महामाननीय देवनारायण कुँवर किसलय विशारद [दरभंगा]

विरोधक—माननीय कमलदेवनारायण सिंह [छपरा]

ता० ४ सितंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में आधुनिक छायावाद तथा रहस्यवाद कला के पीछे मानसिक विलासिता है; अतः इसे साहित्य से दूर भगाना चाहिए ।

प्रस्तावक—महामाननीय वेंकटेश्वर राव 'अरविंद' [आंध्र]

समर्थक—महामाननीय देवनारायण कुँवर किसलय विशारद [दरभंगा]

विरोधक—माननीय लक्ष्मीनारायण भारतीय विशारद [महाराष्ट्र]

ता० ११ सितंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में धर्म के बिना सुख-शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं किया जा सकता । अतः धार्मिक मामलों में सरकार अवश्य हस्तक्षेप करे जिससे प्रजा में शांति रहे ।

प्रस्तावक—माननीय मंगलानंद पाँड़वे विशारद [संथाल परगना]

समर्थक—माननीय सेवाधर झा 'मधुप' विशारद [भागलपुर]

विरोधक—महामाननीय एस० बी० कृष्णन [मद्रास]

ता० ६ नवंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में भारत में साम्यवादी सरकार स्थापित होने पर ही कृषि की उन्नति हो सकती है ।

प्रस्तावक—माननीय शिवानंद शर्मा [कर्नाटक]

समर्थक—माननीय नारायण राम 'मतवाला' [भागलपुर]

विरोधक—महामाननीय बी० ए० चिन्नस्वामी [मद्रास]

ता० १३ नवंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में देश में जमींदारी प्रथा से बहुत हानियाँ होती हैं अतः सरकार का कर्त्तव्य है कि प्रजा की रक्षा के लिए जमींदारी प्रथा को तोड़ दे जिससे मनुष्यमात्र की उन्नति हो सके ।

प्रस्तावक—माननीय रामकुमार वर्मा [मछलीपट्टम]

समर्थक—माननीय कामेश्वरनाथ कर्म्हे [संथाल परगना]

विरोधक—माननीय सागरप्रसाद राय विशारद [संथाल परगना]

ता० २० नवंबर शनिवार—

सभा की सम्मति में संसार की गरीबो का इलाज साम्यवाद ही है । अतः साम्यवाद का प्रचार बिना किसी प्रतिबंध के होना चाहिए ।

प्रस्तावक—माननीय भगवानदत्त राजहंस [संथाल परगना]

समर्थक—माननीय मोहनलाल छाजेड़ [महाराष्ट्र]

विरोधक—महामाननीय बी० ए० चिन्नस्वामी [मद्रास]

ता० २७ नवंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में सरकार की ओर से किसान और मजदूरों की संतानों को अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए।

प्रस्तावक—माननीय भुवनेश्वरप्रसाद शर्मा [मुजफ्फरपुर]

समर्थक—माननीय मंगलानंद पँड़वे विशारद [संथाल परगना]

विरोधक—महामाननीय प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक [उड़ीसा]

ता० ४ दिसंबर शनिवार—

इस सभा की सम्मति में गांधीवाद आधुनिक युग की समस्या को हल नहीं करता। अतः साम्यवाद को ही अपनाना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

प्रस्तावक—माननीय रामकुमार वर्मा [मछलीपट्टम]

समर्थक—माननीय विमलचंद्र 'चंद्र' [बंगाल]

विरोधक—माननीय के० गोपाल साहित्य-भूषण [केरल]

हिंदी विद्यापीठ के निजी साहित्य प्रेस, देवघर में पं० शिवराम झा द्वारा मुद्रित।

ता० २५ सितंबर शनिवार—

आजकल सरकार की ओर से जो राष्ट्रीय साहित्य पर बार-बार आघात किया जाता है, हमारी साहित्यिक उन्नति में यह नीति बाधक है। अतः घोर निन्दनीय है।

प्रस्तावक—माननीय सागरप्रसाद राय 'विशारद'
[संथाल परगना]

समर्थक—माननीय लक्ष्मीनारायण भारतीय 'विशारद'
[महाराष्ट्र]

विरोधक—महामाननीय प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक [उड़ीसा]

ता० २ अक्टूबर शनिवार—

विश्व-शांति के लिए वर्त्तमान राष्ट्र-संघ उपयुक्त नहीं है; अतः इसका न रहना ही अच्छा है।

प्रस्तावक—माननीय के० गोपाल साहित्य-भूषण [केरल]

समर्थक—माननीय शिवानंद शर्मा [कर्नाटक]

विरोधक—महामाननीय एन० डी० शंकर [कर्नाटक]

ता० २३ अक्टूबर शनिवार—

धर्म के बिना कला की उन्नति नहीं हो सकती। अतः सरकार को चाहिए कि धर्म पर किसी प्रकार का आघात न होने दे।

प्रस्तावक—माननीय रामकुमार वर्मा [मछलीपट्टम]

समर्थक—माननीय निर्मलचंद्र 'चंद्र' [बंगाल]

विरोधक—माननीय के० गोपाल, साहित्य-भूषण [केरल]